आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 20 रोहतक, 21 अक्तूबर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

वेद के प्रचार-प्रसार से होगी विश्वशान्ति

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

महर्षि दयानन्द सरस्वती को यदि सबसे अधिक कोई प्रिय वस्तु थी तो वह था सत्य। महर्षि ने आर्यसमाज के नियम निर्धारित किये उनमें सत्य पर बहुत बल दिया है। उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश रखा। इस नाम का सही अभिप्राय था कि ग्रन्थ सत्य के अर्थ का प्रकाश करने वाला है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति होना दुष्कर है। सब उन्नति का केन्द्र स्थान एकता है। जहाँ भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाये वहीं संसार में सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं। हम सब एकमत हो जायें और एक रीति से देश का सुधार करें तो आशा है देश का सुधार हो सकता है। आप वेद को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार करें और आर्य संस्कृति के मौलिक तत्त्वों को आधार मानकर देश और समाज के पुन: निर्माण का प्रयत्न करें तो निश्चय हम सफल हो सकते हैं। हमको और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन हो रहा है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द ने 1875 में बम्बई में वेद के प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसी संस्था है जो ईश्वरभक्ति तथा देशभक्ति का साथ-साथ प्रचार करती है तथा वेदों के विपरीत सिद्धान्तों एवं पाखण्डों (जैसे-मूर्ति पूजा, प्राण-प्रतिष्ठा, अवतारवाद, देवी-जागरण, फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत, गण्डा-ताबीज, पीर-फकीर, कब्रों, समाधियों का पूजन आदि) के घोर पाप से मनुष्य को बचाकर केवल एक ईश्वर की भक्ति सिखाती है। महर्षि ने वेद के आधार पर कहा है कि परमात्मा की मूर्ति हो ही नहीं सकती है। फिर एक मूर्तिपूजक ने महर्षि से प्रश्न किया कि हमें किसी प्रकार की मूर्तिपूजा करनी करानी नहीं और जो अपने आर्यावर्त में पंचायतन या पंचदेव पूजा जो कि शिव, अम्बिका, विष्णु, गणेश और सूर्य की मूर्ति बनाकर पूजते हैं यह पंचायतन या पंचदेव पूजा है या नहीं? महर्षि इसका उत्तर वेद के आधार पर देते हैं, वे कहते हैं किसी प्रकार की मूर्ति पूजा न करना किन्तु मूर्तिमान् जो नीचे कहेंगे, उनकी पूजा अर्थात् सत्कार करना चाहिये। यह पंचायतन पूजा या पंचदेव पूजा शब्द बहुत अच्छे अर्थ वाला है। परन्तु विद्याहीन मूढों ने उसके उत्तम अर्थ को छोड़कर निकृष्ट अर्थ को पकड़ लिया। जो आजकल शिवादि पांचों की मूर्तियां बनाकर पूजते हैं, उनका खण्डन तो अभी कर चुके हैं पर जो सच्ची पंचायतन पूजा वेदोक्त और वेदानुकूल देवपूजा व मूर्तिपूजा है, वह सुनो—

प्रथम-माता मूर्तिमती पूजनीय देवता अर्थात् सन्तानों को तन, मन, धन से सेवा करके माता को प्रसन्न करना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। **दूसरा**-पिता सत्य-कर्त्तव्य देव। उसकी भी माता के सदृश सेवा करनी। **तीसरा**-आचार्य जो विद्या का देने वाला है उसकी तन, मन, धन से सेवा करनी, **चौथा**-अतिथि जो विद्वान्, धार्मिक, निष्कपटी, सब की उन्नति चाहने वाला, जगत में भ्रमण करता हुआ सत्योपदेश से सबको सुखी करता है उसकी सेवा करें, **पांचवां**-स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए पत्नी पूजनीय है।

ये पाँच मूर्तिमान् देव, जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, सत्य शिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढ़ियां हैं। उनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्ति पूजते हैं वे अतीव पामर, नरकगामी और वेदविरोधी हैं (सत्यार्थप्रकाश)।

महर्षि दयानन्द मूर्तिपूजा के विरोधी ही नहीं, प्रबल विरोधी थे, यहां तक कि उन्होंने दुष्ट आचरण तक की संज्ञा दे डाली। ईश्वर के निराकार होने के कारण उसकी मूर्ति हो ही नहीं सकती, इस प्रधान युक्ति के अतिरिक्त अन्य अनेक अकाट्य तर्कों एवं प्रमाणों के आधार पर वे मूर्तिपूजा का खण्डन करते रहे। कुछ लोगों के इस मन्तव्य का, कि मूर्त पदार्थ के बिना ईश्वर का ध्यान कैसे करते बनेगा, उत्तर देते हुए वे कहते हैं, शब्द का आकार नहीं होता तो भी शब्द ध्यान में आता है या नहीं? आकाश का आकार नहीं होता, आकाश का ध्यान करने में आता है या नहीं? जीव का आकार नहीं होता तो भी जीव का ध्यान होता है या नहीं? वे इस सम्बन्ध में अपने तक को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहते हैं,

''जब परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्ति ही

क्रमश: पृष्ठ 2 पर...

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 12, 13 मार्च 2016 (शनिवार, रविवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

वेद के प्रचार-प्रसार से होगी.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

नहीं बन सकती और मूर्ति के दर्शन मात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर के बनाये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ जिनमें ईश्वर ने अद्‌भुत रचना की है, क्या ऐसी रचना युक्त पृथ्वी, पहाड़ आदि परमेश्वर रचित महामूर्तियों की जिन पहाड़ आदि से मनुष्यकृत मूर्तियां बनती हैं, उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता क्या?'' (सत्यार्थप्रकाश)।

जिन लोगों के मत में मन साकार में स्थित रहता है और निराकार में स्थित होना कठिन है, उनकी शंका का समाधान करते हुए स्वामी जी कहते हैं—मन साकार में स्थिर कभी नहीं होता, क्योंकि उसको मन झट ग्रहण करके उसके एक-एक अवयव में घूमता और दूसरे में दौड़ जाता है और निराकार परमात्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता है तो भी अन्त नहीं पाता। निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता। परन्तु ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का विचार करता-करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है और जो साकार में स्थिर हो तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता, क्योंकि जगत्, मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फंसा रहता है, परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता तब तक निराकार में न लगावे।

मूर्तिपूजा का खण्डन न करो—अमृतसर में एक दिन पंडित बिहारीलाल एक्टसट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर ने स्वामी जी से कहा कि महाराज! आपके सब विचार उत्तम हैं और सब प्रकार से श्रेष्ठ हैं, यदि आप मूर्तिपूजा का खण्डन न करें तो सब लोग आपके अनुकूल हो जायें और आपकी आज्ञा को स्वीकार कर लें। इसके उत्तर में महर्षि ने वही कहा जो वे ऐसे प्रस्ताव के उत्तर में कहा करते थे कि मैं सत्य को नहीं छोड़ सकता। निराकार परमात्मा की उपासना छोड़कर जो दूसरे की उपासना करता है, वह सुख को प्राप्त कभी नहीं हो सकता, किन्तु सदा दुःख में ही पड़ा रहता है।

आज जमाना बदल चुका है,
सत्य को वह भूल चुका है।
सत्य की शक्ति बहुत बड़ी है,
पर स्वर्ग के नीचे दबी पड़ी है॥

जो कोई सभा में अन्याय होते देखकर, मौन रहे तथा न्याय के विरुद्ध बोले, वह महापापी होता है (महर्षि दयानन्द)।

परमात्मा के रचे हुए पदार्थ सब के लिए एक से हैं। सूर्य और चन्द्रमा सबको समान प्रकाश प्रदान करते हैं। वायु और जलादि वस्तुएं सब को एक-सी दी गई हैं। जैसे वे पदार्थ ईश्वर की देन हैं, सब प्राणियों के लिए एक से हैं। ऐसे ही परमेश्वर प्रदत्त वैदिक धर्म की सभी मनुष्यों के लिए एक और एक-सा होना चाहिये।

वेद अर्थात् जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा दी गई है, उसको हम यथावत् करना, छोड़ना मानते हैं। जिसलिए हमको मान्य है। इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही मानकर सब मनुष्यों को विशेष आर्यों को एकमत होकर रहना चाहिये।

हिन्दुओं में सबसे बड़ा रोग यह है कि जगत् के बनाने वाले भगवान् को खुद बनाते हैं। अपने हाथ से बनाये भगवान् की पूजा करते हैं। वे अपने को बनाने वाले परमात्मा में प्राण-प्रतिष्ठा करके ये भगवान् का खुद को भगत मानते हैं। कायर पाखण्डी हिन्दू सन्त न हो सत्य का प्रकाश करने का साहस दिखाता है और न असत्य मत का खण्डन ही करता है। महर्षि दयानन्द-सा आत्मबल और साहस किसी में है ही नहीं।

कितनी भारी भूल हुई थी,
क्यों दिलों ने ठान लिया।
जब इस देश के लोगों ने,
पत्थर को ईश्वर मान लिया॥

मेरी बात सही हो तो मानो—महर्षि दयानन्द ने कहा है कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं यह नहीं चाहता कि जो कुछ भी मैं कहूँ आप उस पर आँख मींचकर चलने लगें। आप उस पर विचार करें, उसे जाचें, परखें, यदि वह आपको सत्य जान पड़े तो उस पर चलें और यदि वह असत्य जान पड़े तो उस पर कोई ध्यान न दें। अन्धविश्वास ही हमारे नाश का मूल कारण है। संस्कृत पुस्तकों में ज्ञान से बृहत् कोष भरा है, उसे पढ़ो और देखो कि उनमें क्या है। ऐसा मत कहो कि कोई बात केवल इसलिए माननीय है या त्याज्य है क्योंकि दयानन्द सरस्वती ऐसा कहता है।

दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते थे कि काश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का प्रयोग और प्रचार होगा। मैंने देशभर में भाषा का ऐक्य संपादन करने के लिए ही अपने सकल ग्रन्थ आर्य भाषा में लिखे और प्रकाशित किये हैं।

पूरे संसार में भारत ही ऐसा देश है, जिसकी प्राइमरी शिक्षा विदेशी भाषा में पढ़ाई जाती है। विदेशी भाषा पढ़ना बुरा नहीं है, लेकिन विदेशी भाषा से अधिक महत्त्व अपनी राष्ट्रभाषा को देना चाहिए। 1966 में रूस के राष्ट्रपति हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री को भारत में रूसी भाषा में श्रद्धांजलि दी थी लेकिन हमारे देश के सभी राजनेताओं ने अंग्रेजी भाषा में श्रद्धांजलि दी थी। केवल श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी में श्रद्धांजलि दी थी। अगले दिन समाचार-पत्रों में रूसी राष्ट्रपति का ब्यान था कि इस देश का बड़ा दुर्भाग्य है कि इस देश के नेताओं को अपनी राष्ट्रभाषा से कोई प्रेम नहीं है। अपने देश की राष्ट्रभाषा ही देश की उन्नति का सबसे बड़ा कारण होता है।

आज भारत में पश्चिमी शिक्षा एवं संस्कृति हावी होने के कारण पैसे को ही सब कुछ समझा जाने लगा है। इसी से पाप, अधर्म, अन्याय, अत्याचार आदि बढ़े हैं। यह सब पैसे के लिए ही हो रहा है। सब धन के लिये भाग रहे हैं। धन की सोच स्वार्थ व अहंकार को बढ़ाकर पतन की ओर ले जाती है। मानवतावादी भावना गायब हो रही है। आज आदमी के पास सब कुछ होते हुए भी स्वास्थ्य, शान्ति, चैन, परिवार की एकता, प्रेम व संतोष नहीं है। एक कवि ने मनुष्य को सचेत किया है कि

बहुत गई थोड़ी रही,
अब अज्ञानी चेत।
फिर पछताये होत क्या,
जब चिड़िया चुग गई खेत॥

आज हमारे स्वार्थी स्वार्थी नेता लोग आर्यसमाजों में भी राजनीति का प्रवेश कराकर आर्यसमाजों को भी बरबाद करने पर तुले हुए हैं। क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया है कि हमारी गलत बातों का खण्डन आर्यसमाज ही कर सकता है। इसलिए आर्य संस्थाओं में अपने पिल्लों का प्रवेश करके अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए सफलता प्राप्त करना चाहते हैं।

ऐसे राजनेताओं के पिल्लों से मेरी प्रार्थना है कि उन्हें अपने राजनेताओं से न डरकर परमात्मा से अवश्य डरना चाहिए क्योंकि कितना ही अच्छा धर्म क्यों न हो, जब तक उसके नियमों व सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण करके दिखाने वाले लोग नहीं होंगे तब तक वह धर्म उन्नति नहीं कर सकता। जो आदमी स्वार्थी राजनेताओं से न डरकर परमात्मा से डरेगा तभी धर्मात्मा होगा अन्यथा नहीं। उसी निराकार, अज, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयामय ईश्वर से हमें सुख-शान्ति, विश्वशान्ति प्राप्त होगी।

भाषण प्रतियोगिता का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज मॉडल टाउन हिसार के हाल में प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुरेरा वाला अपने निजी खर्च से 6.10.2015 को भाषण प्रतियोगिता विधिवत् सम्पन्न करवाई। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय व

गुरुकुल आर्यनगर समेत 25 स्कूलों के छात्र -छात्राओं ने भाग लिया। प्रतिभागी कुल 40 थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने की। मंच का संचालन पुरोहित पं० सूर्यदेव वेदांशु ने किया।

प्रथम आई जी.डी.ए.वि. की छात्रा नैन्सी को 11,000 इनाम दिया गया। द्वितीय सैंट मेरिज स्कूल की छात्रा भारती 5100 रुपये, तृतीय आशुतोष विश्वास स्कूल के छात्र को 3100 रुपये तथा 1500 रुपये छात्रों को सांत्वना पुरस्कार व वैदिक साहित्य प्रदान किया गया।

इस अवसर पर प्रधान श्री जगदीश प्रसाद आर्य, सेठ रामरिछपाल आर्य, पं० रामजीलाल पूर्व सांसद, सीताराम बेरवाल, पवन कुमार आर्य, गंगादत्त अहलावत, माता शन्नोदेवी ठकराल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम प्रातः 9 बजे से 1.30 तक चला। आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी व प्रिं० सुनीता महतानी निर्णायक मण्डल थे। बहन कल्याणी ने महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला।

डॉ० प्रमोद योगार्थी ने संस्कारों का महत्त्व, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने आर्यसमाज मॉडल टाउन के अधिकारियों का धन्यवाद किया तथा चरित्र निर्माण पर विचार रखे।

—सुरेन्द्रसिंह बेरवाल, हिसार

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

॥ ओ३म् ॥

अकेले प्रभुभक्त का विजय

-: वेद-मन्त्र :-

युध एकः सं सृजति यो अस्या एक इद्वशी।
तरांसि यज्ञा अभवन्तरसां चक्षुरभवद्वशा॥ (अथर्व० 10.10.24)

अर्थ—(यः) जो साधक (अस्याः) इस पारमेश्वरी शक्ति को (एक इद् वशी) अकेला, एकान्त में योगाभ्यास द्वारा वशी अर्थात् अपने वश में कर लेता है वह (एकः) अकेला ही (युधः) बुराइयों के विरुद्ध युद्ध, संघर्ष (संसृजति) छेड़ देता है। इस समय उसके (यज्ञाः) यज्ञादि उत्तम कर्म (तरांसि) जीवन-संग्राम में पार ले जाने वाले (तरांसि अभवन्) नौका या रथ आदि वाहन रूप हो जाते हैं और (वशा) पारमेश्वरी शक्ति उन (तरसाम्) योगी के सहयोगी यज्ञ रूप वाहनों का (चक्षुरभवत्) मार्गदर्शन करती है।

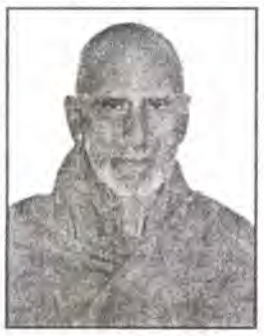

पूज्य आचार्य बलदेव जी

जीवन एक संग्राम है। जो यहाँ आकर उससे दो-दो हाथ करता है उसका विजय होता है। युद्धादि में सेना, आयुध और वाहन तथा अच्छे सारथियों की आवश्यकता होती है। यदि किसी में अकेले लड़ने का साहस नहीं है तो वह अपने से शक्तिशाली का दामन पकड़ लेता है।

जब किसी को अपना सहायक ही बनाना है तो फिर क्यों नहीं उसे ही ढूंढे जो सबसे शक्तिशाली हो। सब ओर दृष्टिपात करने पर सर्वशक्तिमान् एक ईश्वर ही दृष्टिगत होता है। उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करने पर सचमुच ही वह रक्षक हो जाता है। '**यो अस्या एक इद् वशी**' जब वह कृष्ण की भांति अर्जुन का सारथि बन जाता है तब साधक '**एकः युधः सं सृजति**' अकेला ही अन्याय, अत्याचार, अज्ञानरूपी बाह्य शत्रु काम, क्रोधादि आभ्यन्तर शत्रुओं से मुकाबला करने लगता है। याद रखो जो ईश्वर से डरता है वह दूसरों से भयभीत नहीं होता और जो ईश्वर का भय न मानकर अधर्म का आचरण करता है उसे पग-पग पर भय का सामना करना पड़ता है। साधक के वश में हुआ जगन्नियामक प्रभु उसका सारथि बन उसे सर्वत्र विजयी बना देता है।

इस साधक का बल यज्ञादि उत्तम कर्म हैं। ये ही उसके आयुध और वाहन हैं जिनके दम पर वह आसुरी शक्तियों से अकेला ही लोहा लेने के लिये निकल पड़ता है। धीरे-धीरे उसके सहयोगी भी जमने लगते हैं और उसका कारवाँ बढ़ता ही चला जाता है।

कई बार ऐसा भी होता है कि ऐश्वर्य के मद में वह अपने पथ-प्रदर्शक को भूल जाता है। परिणाम स्वरूप वह पुनः अवनति के गर्त्त में फँस जाता है। जिन यज्ञादि के आधार पर वह आगे बढ़ा था उनका परित्याग कर देने से वह स्वयं किसी एक पक्ष का समर्थक बन जनता की भीड़ में खो जाता है। वह यह भूल जाता है कि जिस सीढ़ी का सहारा लेकर वह इतनी ऊंचाई पर पहुंचा है उस सीढ़ी के खिसकने पर उसे धड़ाम से नीचे गिरना पड़ेगा, जिसमें उसके जीवन को भी खतरा है। इसलिये वेद ने कहा '**तरांसि यज्ञा अभवन्**' यज्ञादि उत्तम कर्म उसके बल अर्थात् सहायक हुए तथा 'तरांसि चक्षुरभवद् वशा' वह पारमेश्वरी शक्ति उन बलों या सहायक साधनों की मार्गदर्शिका बनी जिसके बतलाए मार्ग पर चलकर ऐसा साधक अन्धकार को भगा सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश करता हुआ निरन्तर आगे बढ़ता जाता है।

सबसे बड़ा बल आत्मिक बल है। महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं—"ईश्वर की भक्ति करने से आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पहाड़ जैसी विपत्ति आने पर भी अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होगा।" जब ईश्वरभक्ति से इतना सामर्थ्य उत्पन्न होता है तो क्यों न 'बलमसि बलं मयि धेहि' का जाप किया जाए।

(साभार-वेद-स्वाध्याय) —आचार्य बलदेव

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

चतुर्थ समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 297. ब्राह्मण के क्या गुण हैं?

उत्तर-ब्राह्मण में 15 कर्म और गुण अवश्य होने चाहिएं—

1. वेद को पढ़ना, 2. वेद का पढ़ाना, 3. यज्ञ करना, 4. यज्ञ का करवाना, 5. दान देना, 6. दान लेना, 7. मन से बुरे विचार की इच्छा भी न करनी, 8. मन को अधर्म में कभी प्रवृत्त न होने देना, 9. श्रोत्र और चक्षु आदि इन्द्रियों को अन्याय-आचरण से रोक कर धर्म में चलाना, 10. सदा ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय होके धर्मानुष्ठान करना, 11. निन्दा-स्तुति, सुख-दुःख, शीतोष्ण, क्षुधा-तृषा, हानि-लाभ, मान-अपमान में हर्ष-शोक छोड़के धर्म में दृढ़ निश्चय रहना, 12. कोमलता, निरभिमानता, सरलता, सरल स्वभाव रखना, कुटिलतादि दोष छोड़ देना, 13. सब वेदादि शास्त्रों को सांगोपांग पढ़ने-पढ़ाने का सामर्थ्य, विवेक, सत्य का निर्णय जो वस्तु जैसा हो अर्थात् जड़ को जड़, चेतन को चेतन जानना और मानना, 14. पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का यथायोग्य उपयोग लेना, 15. कभी वेद, ईश्वर, मुक्ति, पूर्वजन्म, धर्म, विद्या, सत्संग, माता-पिता, आचार्य और अतिथियों को न छोड़ना और निन्दा कभी न करना। ये 15 कर्म ब्राह्मण के हैं।

कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न 298. क्षत्रियों के क्या-क्या गुण-कर्म होने चाहिएं?

उत्तर-न्याय से प्रजा की रक्षा अर्थात् पक्षपात छोड़ के श्रेष्ठों का सत्कार और दुष्टों का तिरस्कार करना, सब प्रकार से सबका पालन (दान), विद्या, धर्म की प्रवृत्ति और सुपात्रों की सेवा में धनादि पदार्थों का व्यय करना (इज्या), अग्निहोत्रादि यज्ञ करना व कराना (अध्ययन), वेदादिशास्त्रों का पढ़ना तथा पढ़ाना और विषयों में न फंसकर जितेन्द्रिय रह के सदा शरीर और आत्मा से बलवान रहना।

(शौर्य) सैकड़ों सहस्त्रों से भी युद्ध करने में अकेले को भय न होना। (तेजः) सदा तेजस्वी अर्थात् दीनता रहित प्रगल्भ दृढ़ रहना। (धृति) धैर्यवान् होना, (दाक्ष्य) राजा और प्रजा सम्बन्धी व्यवहार और सब शास्त्रों में अति चतुर होना। (युद्धे) युद्ध में भी दृढ़ निःशंक रह के उससे कभी न हटना, न भागना अर्थात् इस प्रकार से लड़ना कि जिससे निश्चित विजय होवे। आप बचे, जो भागने से वा शत्रुओं को धोखा देने से जीत होती हो तो ऐसा ही करना। (दान) दान-शीलता रखना। (ईश्वर-भाव) पक्षपात रहित होके सबके साथ यथायोग्य वर्तना, विचार के देवे, प्रतिज्ञा पूरी करना, उसको कभी भंग होने न देना। ये ग्यारह क्षत्रिय वर्ण के गुण हैं।

प्रश्न 299. वैश्य के गुण-कर्म बतायें?

उत्तर-(पशुरक्षा) गाय आदि पशुओं का पालन-वर्धन करना, (दान) विद्या, धर्म की वृद्धि करने कराने के लिए धनादि का व्यय करना, (इज्या) अग्निहोत्रादि यज्ञों का करना, (अध्ययन) वेदादि शास्त्रों का पढ़ना, (वणिक्पथ) सब प्रकार के व्यापार करना, (कुसीद) एक सैकड़े में चार, छः, आठ, बारह, सोलह वा बीस आनों से अधिक ब्याज और मूल से दूना अर्थात् एक रुपया दिया हो तो सौ वर्ष में भी दो रुपये से अधिक न लेना और न देना, (कृषि) खेती करना। ये वैश्य के गुण-कर्म हैं।

प्रश्न 300. शूद्र के गुण-कर्म बतायें?

उत्तर-शूद्र को योग्य है कि निन्दा, ईर्ष्या, अभिमान और दोषों को छोड़के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की सेवा यथावत् करना और उसी से अपना जीवनयापन करना, यही एक शूद्र का कर्म है। क्रमशः

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क—01262-216222, मो० 08901387993

वैदिक शिक्षा और योग की अलख जगा रहा गुरुकुल : बीईओ गागट

कुरुक्षेत्र, 12 अक्टूबर 2015 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र न केवल युवाओं को भारतीय सभ्यता और संस्कृति की पूर्ण जानकारी दे रहा है बल्कि शरीर को स्वस्थ और बलिष्ठ बनाने हेतु भी बच्चों को प्रेरित कर रहा है। उक्त शब्द गांव त्यौड़ा के राजकीय उच्च विद्यालय में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के वेदप्रचार विभाग द्वारा लगाए गये सात दिवसीय योग एवं चरित्र निर्माण शिविर के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे खण्ड शिक्षा अधिकारी रामदिया गागट ने कहे।

उन्होंने गुरुकुल के संरक्षक आचार्य देवव्रत एवं प्रधान कुलवंत सिंह सैनी के द्वारा चलाए जा रहे वेदप्रचार अभियान की मुक्तकंठ से सराहना की और कहा कि वास्तव में गुरुकुल कुरुक्षेत्र समाज से कन्या भ्रूणहत्या, नशाखोरी, पाखण्डता, अज्ञानता को मिटाने के लिए दिन-रात एक किये हुए है। यह जानकारी गुरुकुल के सह-प्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान ने दी।

इस अवसर पर स्कूली बच्चों द्वारा पिछले सात दिनों में गुरुकुल के व्यायाम शिक्षक समरपाल आर्य एवं चन्द्रपाल आर्य द्वारा सिखाए गये विभिन्न आसनों सहित डम्बल, लेजियम, स्तूप-निर्माण, सूर्य नमस्कार, जूडो-कराटे आदि का शानदार प्रदर्शन किया गया जिसे देख कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोग दंग रह गये। गुरुकुल के भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य ने बच्चों को देशभक्ति और ईश्वरभक्ति के गीत सुनाए।

इस अवसर पर स्कूल के हैड मास्टर सुन्दरसिंह, सरपंच ऋषिपाल, मात्र बुधराम, तिलकराज, बलकार सिंह, मैडम सविता शर्मा, सुमन, सीमा शर्मा, सरोजबाला, रजनीबाला, शिक्षक नरेश कुमार, लाभ सिंह, सतीश कुमार, मन्दीप सिंह, बलवान सिंह, निर्मल सिंह, सतीश कुमार सहित भारी संख्या में माता-बहनें मौजूद रहीं। अंत में स्कूल के हैड मास्टर सुन्दरसिंह द्वारा मुख्य अतिथि बीईओ रामदिया गागट सहित वेदप्रचार अधिष्ठाता भोपालसिंह आर्य, व्यायाम शिक्षक समरपाल आर्य व चन्द्रपाल आर्य को स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज धनौंदा ब्लाक-कनीना (महेन्द्रगढ़)	27 से 29 अक्तू० 2015
2.	आर्यसमाज पालिका कॉलोनी भिवानी रोड रोहतक	23 से 25 अक्तू० 2015
3.	आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक	24 से 25 अक्तू० 2015
4.	**आर्य युवा महासम्मेलन, पानीपत**	6 दिसम्बर 2015
	स्थान-आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत	
5.	18वां सत्यार्थप्रकाश महोत्सव	31 अक्तू० से 2 नव० 2015
	सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर (राज०)	
6.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी (पानीपत)	6 से 8 नव० 2015
7.	आर्यसमाज प्रेमनगर, सैक्टर-2, 6, 7, बहादुरगढ़	8 नव० 2015

—सभामन्त्री

24वां वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

आप सभी को यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आपके अपने प्रिय **गुरुकुल का 24वां वार्षिक महोत्सव (शुक्रवार) 6 नवम्बर 2015** को सोल्लास मनाया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के प्रख्यात साधु, संन्यासी, विद्वान् तथा भजनोपदेशकों के अतिरिक्त राजनेता भी आमन्त्रित किये जा रहे हैं। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के विशेष आकर्षक कार्यक्रम भी देखने, सुनने को उपलब्ध होंगे।

आप सभी से साग्रह प्रार्थना है उत्सव में पधार कर सपरिवार लाभ उठायें।

निवेदक : प्रबन्धक समिति, गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन

हिसार। दिनांक 26.9.2015 को सायं 6 बजे महात्मा आनन्द स्वामी भवन में दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय (हिसार) में श्री सत्यपाल आर्य एडवोकेट महामन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा हरयाणा की सुपुत्री डॉ. सुवर्चा आर्या के 23वें जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी थे। विद्यालय के छात्रों ने मन्त्रपाठ किया। आचार्य जी ने वेदमंत्र की व्याख्या की एवं बेटी को आशीर्वाद दिया। विद्यालय के ब्रह्मचारी अमित आर्य का प्रेरणादायक भजन हुआ।

अन्य बेटी को आशीर्वाद देने वालों में महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, 90 वर्षीय दादा सन्तलाल आर्य, दादी 88 वर्षीय श्रीमती शान्तिदेवी, ताई जी श्रीमती स्नेहप्रभा आर्या, माता श्रीमती सरोज आर्या, कैलाशचन्द्र शास्त्री, श्रीमती सन्ध्या आर्या आदि थीं। कार्यक्रम के बाद देशी घी का प्रसाद बांटा गया।

—ब्र० रमेश कुमार आर्य (हिसार)

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

आरक्षण और सत्यार्थप्रकाश

❑ प्राचार्य अभय आर्य

सुखद आश्चर्य की बात-सभी समस्याओं एक निदान व समाधान-'सत्यार्थप्रकाश'।'धर्म' को आधार बना सत्ता लेने वाली बी.जे.पी. अनेक अवसरों पर वाद-विवाद में 'धर्म' की व्याख्या करने में असमर्थ रहती है। ऐसे समय में आर.एस.एस. को भी अनेक बार आर्यसमाज के आलोक में ये व्याख्यायें करनी पड़ती हैं, लेकिन ज्ञान अधकचरा व पूर्वाग्रह से ग्रसित होने के कारण यह सब प्रभावकारी नहीं रहता और तथ्य उलझते जाते हैं। भला तब हो जब बी.जे.पी. व आर.एस.एस. सत्य स्वीकार करते हुए हृदय से आर्यसमाज द्वारा मान्य सत्य मान्यताओं को स्वीकार करे। 'आरक्षण' के विषय को 'सत्यार्थप्रकाश' कैसे सुलझाता है, आइए तनिक विचार करते हैं।

आचार्य अभय आर्य

अमीर, गरीब, हर वर्ग को उन्नति के समान अवसर मिले, यही आरक्षण का औचित्य है। ये अवसर मिलने के बाद भी यदि किसी प्रकार का भेदभाव किया जाए तो पुरुषार्थ का महत्त्व नहीं रहता। यदि ऐसे समान अवसर मिलने पर कोई धनी या उच्च वर्ण वाला व्यक्ति गरीब या निम्न वर्ग के व्यक्ति (जिसे उन्नति का समान अवसर मिला है) से विकास में ऊँचा उठ जाता है और उस समय यदि कोई उसके विकास में किसी प्रकार की बाधा उस गरीब या निम्न वर्ग के व्यक्ति को आधार बनाकर पहुंचाई जाती है तो कम्युनिज्म का जन्म होता है तथा जब गरीब या निम्न वर्ग को उन्नति का समान अवसर न मिले तो तानाशाही विचारधारा का जन्म होता है। 'लोकतन्त्र' की सही व्याख्या वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर ही होती है। तृतीय समुल्लास में समान अवसर के विषय में शिक्षा के संदर्भ में आता है, ''सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जायें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सबको तपस्वी होना चाहिए।'' यही समान अवसर के साथ-साथ 'तपस्वी' शब्द से पुरुषार्थ का महत्त्व सिद्ध होता है। वर्तमान की आरक्षण प्रणाली गरीब व निम्न वर्ग को पुरुषार्थ से वंचित करके उनकी उन्नति में बाधा पहुंचाने वाली है। चतुर्थ समुल्लास में जहां 'ब्राह्मण' बनने के कर्मों का उल्लेख है, वहां यह भी उल्लेख है कि नीच कर्म से उच्च वर्ण का व्यक्ति निम्न वर्ण को प्राप्त हो जाता है।

समान अवसर व पुरुषार्थ का महत्त्व होने पर भी न्याय प्रणाली में भी न्यायपूर्वक 'आरक्षण' का विधान है। षष्ठ समुल्लास में इस प्रसंग को अवश्य पढ़ें, ''जिस अपराध में साधारण मनुष्य पर.....अपराध में उतना ही अधिक दण्ड देना चाहिए।'' इस संदर्भ में व अन्य संदर्भों में ऐसे सिद्धान्तों से व्यवस्था बनाने में कोई समस्या नहीं उत्पन्न हो सकती।

सही सवाल

सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर न केवल समान नागरिक संहिता बनाने पर जोर दिया, बल्कि सरकार से पूछा भी कि वह इस दिशा में आगे क्यों नहीं बढ़ रही है? सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी उस याचिका की सुनवाई करते समय की जिसमें ईसाई समुदाय के दम्पतियों को आपसी सहमति से तलाक के लिए अन्य समुदायों के मुकाबले एक वर्ष अधिक प्रतीक्षा करने वाले प्रावधान को चुनौती दी गई थी? इस मामले में सरकार को अपना पक्ष रखने के लिए तीन महीने का समय और दिया गया है। इसमें संदेह है कि सरकार अपना जवाब दाखिल करते समय समान नागरिक संहिता की दिशा में आगे बढ़ने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करेगी। इसका संकेत विधिमंत्री सदानन्द गौडा के इस बयान से मिला कि राष्ट्रीय एकता के लिए समान नागरिक संहिता आवश्यक तो है, लेकिन इसके लिए व्यापक सहमति की जरूरत है। इस तरह की बातें लम्बे अर्से से की जा रही है, लेकिन जब भी समान नागरिक संहिता के लिए आम सहमति बनाने की बारी आती है तो आमतौर पर भाजपा को छोड़कर अन्य राजनीतिक दल किन्तु-परन्तु के साथ हीलाहवाली करने लगते हैं। इतना ही नहीं कुछ दल तो यह दुष्प्रचार करने में जुट जाते हैं कि समान नागरिक संहिता की आड़ में भाजपा विवाह, तलाक उत्तराधिकारी आदि के मामले में अन्य धर्मावलम्बियों को एक ही कानून में बांध देना चाहती है। पिछले छह दशकों से यही हो रहा है और यह जानते हुए भी हो रहा है कि समान नागरिक संहिता के अभाव में महिलाओं और विशेष रूप से ईसाई और मुस्लिम समाज की महिलाओं के अधिकारों का हनन हो रहा है।

यह स्थिति तब है जब संविधान निर्माताओं की ओर से यह स्पष्ट कहा गया था कि देश के सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता बनाने का प्रयास करना होगा। संविधान लागू होने के बाद हिन्दू कोड बिल तो ले आया गया, लेकिन अन्य समुदायों से संबंधित पर्सनल लॉ में कहीं कोई बदलाव लाने की कोशिश नहीं की गई। सच तो यह है कि इसी के साथ तुष्टिकरण की राजनीति ने भी जन्म ले लिया। बीच-बीच में सुप्रीम कोर्ट ने कई बार समान नागरिक संहिता की जरूरत पर जोर दिया, लेकिन कोई भी सरकार इस दिशा में आगे नहीं बढ़ी और उल्टे 1985 में सुप्रीम कोर्ट ने जब शाहबानो के चर्चित मामले में मुस्लिम महिलाओं के लिए उचित भरण-पोषण का अधिकार सुनिश्चित किया तो कांग्रेस की तत्कालीन सरकार ने संविधान में संशोधन के जरिये सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलट दिया। भले ही भाजपा समान नागरिक संहिता की बात करती रही हो, लेकिन इस समय देश में जैसा माहौल है उसे देखते हुए यह लगता नहीं कि वह इस मुद्दे पर आगे बढ़ सकेगी। यदि वह आगे बढ़ती भी है तो अन्य राजनीतिक दल उसका साथ नहीं देने वाले। इन परिस्थितियों में यह आवश्य है कि सुप्रीम कोर्ट ही अपनी ओर से कोई ठोस पहल करे। इसका कोई औचित्य नहीं कि विवाह, तलाक, सम्पत्ति, बच्चों की देखभाल, गुजारा-भत्ता आदि के मामले में अलग-अलग समुदायों के लिए अलग-अलग कानून हों। यदि राजनीतिक दल वोट बैंक और तुष्टिकरण की राजनीति का परित्याग करे तो सभी समुदायों की धार्मिक सांस्कृतिक स्वतन्त्रता का सम्मान करते हुए एक सर्वमान्य समान नागरिक संहिता का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

साभार-दैनिक जागरण, 14.10.15

अपील

सभी आर्यसमाजों, सदस्यों, सक्षम दानी महानुभावों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के परिसर में 24 कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है। सभा कार्यालय परिसर में ऋषिलंगर (भोजनालय) चलता है। अतिथियों के लिए भोजन की नियमित सुन्दर व्यवस्था की जा रही है। सभा के ऋषिलंगर (भोजनालय) में साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी निःशुल्क भोजन करते हैं। साथ ही प्रतिदिन प्रातः-सायं नियमित रूप से यज्ञ किया जाता है। आप अपनी वैवाहिक वर्षगांठ, जन्मदिवस, गृहप्रवेश या अन्य अवसर पर सहयोग कर सकते हैं। सहयोगदाता का नाम सभा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किया जायेगा। अतः समस्त दानी महानुभावों से अपील है कि सभा परिसर में चल रहे निर्माणकार्य एवं सभा के ऋषिलंगर भोजनालय हेतु अधिक से अधिक दानराशि एवं आटा, दाल, चावल, घी, गेहूँ अथवा अन्य प्रकार से सहयोग देकर एक आहुति अवश्य डालें और इस पवित्र यज्ञ के सफल संचालन में सहभागी बनें।

नोट—दो लाख पचास हजार रुपये देने वाले दानी महानुभावों का नाम नवनिर्मित कमरे के साथ उसके नाम का पत्थर लगाया जाएगा।

निवेदक—

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	मा. रामपाल आर्य	कन्हैयालाल आर्य
सभा-संरक्षक	सभा-प्रधान	सभा-मन्त्री	सभा-कोषाध्यक्ष

सरल आध्यात्मिक शिविर

दिनांक : 13 नवम्बर से 17 नवम्बर 2015 तक

स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

शिविर आयोजक : वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास (पंजी.) रोहतक

शिविराध्यक्ष : स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात)

अन्य विद्वान् : स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, आचार्य कर्मवीर जी योग शिक्षक, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राज०) व कमलेश राणा जी, महिला योग शिक्षिका, रोहतक।

प्रवेश शुल्क: 1000/- रुपये

आवेदन करने की अन्तिम तिथि 5 नवम्बर 2015

शिविर प्रवेश पात्रता

1. स्वस्थ व्यसनरहित अनुशासन में चलने वाले को प्रवेश दिया जाएगा।
2. आयुसीमा—न्यूनतम 15 वर्ष।
3. शिक्षा—न्यूनतम 10वीं कक्षा पास।

विशेष-उच्च शिक्षा प्राप्त युवक/युवतियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी। ब्रह्मचारियों के लिए प्रवेश नि:शुल्क होगा। अन्य छात्र एवं छात्राओं के लिए शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में प्रवेश के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।

आवेदन/पंजीकरण करने हेतु सम्पर्क सूत्र—

श्री हवासिंह राठी - मोबा० 09466008120

श्री कर्णसिंह मोर - मोबा० 09728884949

श्री सुगमा मुनी (पूर्व नाम श्रीमती अंगूरी देवी आर्या) - मोबा० 09812792770

निवेदक : निगम मुनि, मोबा० 9355674547

दर्शन योग महाविद्यालय की नई शाखा में प्रवेश प्रारम्भ

आर्यजगत् के महान् योगी स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की शाखा का शुभारम्भ **1 नवम्बर 2015** को रोहतक में स्थित **प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर** में हो रहा है। इसमें दर्शन आदि के अध्यापन की योजना है। प्रवेश के इच्छुक ब्रह्मचारी शीघ्र सम्पर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता—

प्रवेश—केवल ब्रह्मचारियों (पुरुषों) के लिए।

आयु—कम से कम 18 वर्ष।

शैक्षणिक योग्यता—कम से कम 12वीं या समकक्ष।

विशेषताएँ—

प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित भोजन, वस्त्र, दूध-घी, फल, पुस्तक, आसन आदि सभी वस्तुएँ नि:शुल्क प्राप्त होंगी। प्रतिदिन व्यक्तिगत उपासना के लिए अवसर उपलब्ध रहेगा। प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय होगा। प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण होगा। निदिध्यासन के लिए अवसर दिया जायेगा। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक-वैराग्य, मनोनियन्त्रण, यम-नियम, ध्यान, समाधि आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रतिदिन आध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ घण्टे मौन पालन का अवसर रहेगा।

विशेष-रोजड़ स्थित मुख्य शाखा में भी प्रवेश प्रारम्भ है।

सम्पर्क हेतु पता— **दर्शन योग महाविद्यालय**

प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक-124001

Mob. 7027026175, 7027026176

E-mail : darshanyogsundarpur@gmail.com,

Web : darshanyog.org

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें। **—सभामन्त्री**

जगाधरी वर्कशॉप, आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

यमुनानगर। आर्यसमाज, जगाधरी वर्कशॉप का वार्षिकोत्सव 2 से 4 अक्तूबर 2015 तक धूमधाम से मनाया गया। इसमें पंडित इन्द्रजित्देव व श्री नारायण शास्त्री ने ईश्वर, यज्ञ, गृहस्थ, नारी उत्थान व आर्यत्व आदि विभिन्न विषयों पर प्रभावशाली विचार रखे। श्री मोहित शास्त्री ने अपने मधुर कण्ठ द्वारा श्रोताओं का भजनों से रसास्वादन किया। तीनों दिन प्रात: व सायं का यज्ञ भी होता रहा जिसके ब्रह्मा पंडित इन्द्रजित्देव रहे। अन्तिम दिन विशाल ऋषिलंगर का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री पवन गुप्त, रामपाल आर्य, बृजेश आर्य व श्यामसुन्दर आर्य आदि का भरपूर सहयोग मिलता रहा। **—मन्त्री, आर्यसमाज, जगाधरी वर्कशॉप**

पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन

हिसार। आर्यसमाज नलवा (हिसार) में दिनांक 1.10.2015 को श्री राजवीर आर्य के मकान पर स्नेही जी ने माता स्व० श्रीमती पनमेश्वरी देवी के पुण्यतिथि पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही द्वारा किया गया। वानप्रस्थी जी ने माता जी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अतिथि सेवा, निर्भीक, धर्मपरायण महिला बताई। यज्ञ पर श्रीमती सुनेहरी आर्या, सरोज आर्या, उर्मिल आर्या, भलेराम आर्य, युद्धवीर आर्य आदि उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद देशी घी का प्रसाद बांटा गया। **—पवन कुमार आर्य नलवा (हिसार)**

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)

मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)

मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)

मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)

मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)

मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

निजता की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य

मनुष्य ईश्वर की श्रेष्ठ कृति है। समस्त प्राणियों में मनुष्य को ही आत्मचिन्तन, आत्मनिर्णय एवं आत्मनिरीक्षण की अभिव्यक्ति का ज्ञान ईश्वर ने प्रदान किया है। मनुष्य स्वयं का भी हित कर सकता है और उसके सम्पर्क में आने वाले हर जीवों का भी हित कर सकता है। ईश्वर ने मनुष्य को कर्म करने में स्वतन्त्र छोड़ दिया। मानव अच्छा या बुरा जैसा भी चाहे कर्म कर सकता है परन्तु उसके द्वारा किये गये अच्छे या बुरे कर्म का फल ईश्वराधीन है। यद्यपि ईश्वर ने पक्षपात रहित होकर सभी जीवों को समान रूप से जीवन जीने हेतु स्वतन्त्र छोड़ दिया है।

देशराज आर्य

मनुष्यों का जीवात्मा ईश्वर से निकटता का सम्बन्ध रखता है। मनुष्य जीवन में ही जीवात्मा परमात्मा का सान्निध्य पाकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जीवात्मा का परमात्मा से सम्बन्ध होने के कारण ही मनुष्य को किसी बुरे कार्य करने से पहले उसे यह चिंतन होता है कि यह कार्य गलत है, ऐसा नहीं करना चाहिए। परन्तु दुर्बुद्धि उसे बुरे कार्य की प्रेरणा देती है, उसकी अच्छी प्रवृत्ति दब जाती है और वह गलत कार्य कर बैठता है। बुरे विचारों का वेग प्रबल हो जाता है और वह गलत कार्य करने का आदी हो जाता है। अन्तरात्मा की आवाज वह सुनता ही नहीं और पापाचार में संलग्न हो जाता है।

यहाँ संस्कारों का बड़ा महत्त्व है। अच्छे संस्कार मनुष्य को सदाचारी बनाते हैं। अच्छे संस्कार अच्छे माता-पिता, परिवार, गुरु एवं सद्साहित्य से मिलते हैं। आर्यसमाज द्वारा ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविरों के माध्यम से नवयुवकों एवं नवयुवतियों को चारित्रिक शिक्षा दी जाती रहती है। मनुष्य मननशील और बुद्धिमान् है वह अपनी श्रेष्ठता कदम-कदम पर उड़ेल कर स्वयं का एवं अन्य जीवों का जीवन आपत्तिरहित एवं सुखमय बना सकता है। दृढ़ संस्कारित मनुष्य के अन्तर्मन में परोपकार के भाव स्वत: उद्वेलित होते रहते हैं और वह किसी भी संकटग्रस्त स्थिति में अपने श्रेष्ठतम व्यवहार से दूसरों का भला करता रहता है। मार्ग में एक पत्थर पड़ा है। सभी राहगीर उससे बचकर निकलते रहते हैं, कुछ असावधानी के कारण उससे टकराकर गिरते-गिरते बचते हैं। परन्तु एक भला व्यक्ति उस पत्थर को उठाकर दूर डाल देता है तो सब को कितना सुकून मिलता है, कितनों की परेशानी उसने दूर किया, इससे अन्य लोग भी प्रेरणा ले सकते हैं। बस या ट्रेन में किसी के ज्यादा सामान को रखवाने या उतरवाने में, भीड़ होते हुए भी बस या ट्रेन में मिल-बैठकर कुछ समय के सफर को सुखमय एवं आरामदायक बना सकते हैं। किसी का गुम हुआ या गिरा हुआ सामान उसे लौटाकर उसकी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। किसी असहाय या लाचार की यथासंभव सहायता कर उसकी दुआयें ले सकते हैं। भाव यह है कि मानव को पग-पग पर ऐसे अवसर मिलते हैं जहां वह अपने विवेक और बुद्धि से दूसरों की सहायता कर मानवता का सन्देश दे सकता है। दया और परोपकार की भावना से मानव अपना श्रेष्ठतम आचरण प्रदर्शित कर सकता है। ऐसे व्यक्ति स्व-प्रेरणा से ही परोपकार का कार्य करते हैं किसी के कहने या दिखावे के लिए नहीं।

मानव के जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जब वह दूसरों के जीवन रक्षा में सहायक बन सकता है, किसी का अनिष्ट होने से उसका बचाव कर सकता है। ऐसे में मनुष्य होने का कर्त्तव्य भी भी बनता है कि उस संकट की घड़ी में उस परिस्थितिजन्य मानव की रक्षा करे। घटना 1978 सितम्बर की है—मैं अपने कार्य से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन स्थित श्री विश्वकर्मा मन्दिर में ठहरा हुआ था। इस मन्दिर में यात्रियों के लिए ठहरने की कुछ व्यवस्था है। प्रात: 9 बजे का समय था कि 20-21 वर्ष की युवा लड़की मन्दिर में आई और मन्दिर के बड़े हॉल में अनजाने ढंग से चारों तरफ देखते हुए इधर-उधर घूमने लगी। उसके चेहरे पर भय के भाव थे तथा आभास हुआ कि वह अनजान व अकेली है। मैंने पंडित महेशदत्त (नवलगढ़ वाले) को बताया कि लगता है यह लड़की भटक कर आ गई है। वृद्ध पंडित ने लड़की से पूछा कि उसे क्या चाहिए? वह मन्दिर में क्यों आई है। लड़की ने गुजराती में कुछ कहा जिसे हम समझ नहीं सके। संयोग से एक यात्री गुजराती जानता था हमारी बातें सुनकर पास आया तथा लड़की से गुजराती में सभी बातें मालूम कर हमें बताया। उन दिनों छोटी रेल लाइन से दिल्ली-अहमदाबाद ट्रेन चलती थी। वह लड़की पालनपुर (गुजरात) से अनायास थोड़ी सनक में ट्रेन में बैठकर नई दिल्ली स्टेशन आ गई और उस लड़की का सौभाग्य कि मन्दिर में चली आई, किसी के चक्कर में पड़ने से बच गई। उसके पिता एवं घर का पूरा पता मालूम कर मैं डाकघर में जाकर तार देकर आया कि उनकी लड़की रेलवे स्टेशन नई दिल्ली विश्वकर्मा मन्दिर में है, तुरन्त आकर ले जाओ। इस अवधि में पण्डित जी ने निकट ही रहने वाली एक समाजसेवी महिला जो पंडित जी को जानती थी, को बुलाया और लड़की को उसके घर भेज दिया ताकि उसके घर-परिवार से लेने आने तक आराम से रह सके। संयोग से तार शीघ्र पहुँच गया और उसी सायं को उसके पिताजी सहित तीन व्यक्ति ट्रेन में सवार होकर दूसरे दिन प्रात: 9 बजे मन्दिर में आ पहुंचे तथा बड़ी जिज्ञासा एवं उत्सुकता से मन्दिर में इधर-उधर देखने लगे। मैंने पण्डित जी को बताया कि लगता है ये लड़की के परिवार वाले हैं। उनमें से एक व्यक्ति तारघर में बाबू था वह हिन्दी भी जानता था। उसने तुरन्त कहा कि हमारी बेटी कहां है? हमने उसे आश्वस्त किया कि आप निश्चिन्त रहें। आप ठीक समय पर यहां आ गये हैं। हमने ही तुम्हें तार देकर यहां पालनपुर से बुलाया है। पण्डित जी ने महिला के पास सूचना भेजी और वह महिला लड़की को लेकर मन्दिर में आई। लड़की को देखते ही परिवार के सदस्यों में इतना मोह उमड़ा कि सब की आंखें भर आईं और लड़की तो रोने लगी। उन्होंने अपने अन्तरमन से हमारा धन्यवाद किया और कहा कि आपने हमारी लड़की हमें सौंपकर हम पर बड़ा आभार किया है। यह घटना उन्हें जीवन भर याद रहेगी। हमें भी बड़ी प्रसन्नता हुई कि हमारे थोड़े से प्रयास से एक भटकी हुई लड़की का जीवन बर्बाद होने से बच गया और वह अपने परिवार में चली गई। यदि हम उस लड़की को अनदेखा कर देते तो ईश्वर जाने उसका क्या होता? दिल्ली जैसे महानगर में अनजान अकेली लड़की का क्या होता है यह सहज अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसी परिस्थितियां मानव के जीवन में कभी-कभी आती हैं। ऐसे में उसे अपना श्रेष्ठतम व्यवहार प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। हो सकता है उसे कुछ अपना समय व कुछ व्यय भी करना पड़े। परन्तु इसका परिणाम बड़ा सुखदायक होता है। इस घटना को याद करके भी मन प्रसन्न होता है।

एक अन्य घटना को याद करके भी बड़ी खुशी होती है। बस में एक सीट पर किसी की पोलीथीन थैली पड़ी रह गई तथा एक अशिक्षित महिला को वह थैली मिल गई। उसने पूछा भी परन्तु किसी ने उस थैली को नहीं लिया। वह महिला धारूहेड़ा से बूढ़ीबावल जीप में बैठकर हमारे साथ ही जा रही थी। उसने हमसे उस थैली का जिकर कर दिया और हमारे मांगने पर उसने वह थैली हमें दे दी। हमने सबके सामने उस थैली को देखा तो उसमें किसी नवयुवक के मूल प्रमाण-पत्र, पैनकार्ड, राशनकार्ड आदि आवश्यक कागजात थे। अन्य के लिए थे बेकार परन्तु उस व्यक्ति की तो जीवनभर की उपलब्धि थी। हम उस थैली को विद्यालय में ले गये तथा सभी अध्यापकों के सामने उस थैली वाले का पता ढूंढ़ने लगे। राशन कार्ड से उसका गांव व पिता का नाम मिल गया परन्तु तुरन्त संपर्क हेतु फोन नंबर नहीं मिले। हमें मालूम हुआ कि उस व्यक्ति का गांव बहरोड़ के पास है। हमने बहरोड़ अपने परिचित अध्यापक को फोन किया कि वह उस गांव में स्वयं जाएं या किसी छात्र को भेजकर उस व्यक्ति को समाचार दें कि उसके प्रमाण-पत्र आदि की थैली बूढ़ीबावल सरकारी स्कूल में रखी है शीघ्र आकर ले जाए। समाचार जाने में दो-तीन दिन लग गये।

इस बीच वह अपने मूल प्रमाण-पत्र खो जाने से बड़ा विचलित एवं दु:खी था। पांचवें दिन वह हमारे पास विद्यालय में आया। हमारे पास उस थैली में उसके फोटो भी थे। पहचान तुरन्त हो गई कि यह थैली उसी की है। उस व्यक्ति को कितनी खुशी हुई इसका आप अनुमान लगा सकते हैं। दस-बीस हजार रुपये खो जाने से शायद किसी को दु:ख न पहुंचे परन्तु जिसके सारे मूल सर्टिफिकेट गुम हो जायें ऐसे समय जबकि वह नौकरी की तलाश कर रहा हो तो उस पर क्या गुजरेगी अनुमान लगाया जा सकता है। जिसकी वस्तु थी उसी को सौंपकर एक अपार आनन्द मिलता है। हमें हमारी खोई वस्तु मिल जाये तो क्या ऐसी घटना को भुलाया जा सकता है? मनुष्य अपना श्रेष्ठतम आचरण ऐसे

क्रमश: पृष्ठ 8 पर.....

वेदों की ओर लौटो कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा मार्च, 2015 से वेदप्रचार रथ द्वारा गांव-गांव व मोहल्लों में जाकर प्रतिदिन वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसी कार्यक्रम में क्रमश: निम्न प्रकार वेदप्रचार कार्यक्रम आयोजित किये गये—

1. 1 अक्तूबर 2015 को सायं 7.30 बजे से 10 बजे तक ग्राम टिटौली जिला रोहतक में भारी जनसमूह ने वेदप्रचार कार्यक्रम में हिस्सा लिया।
2. 2 अक्तूबर 2015 को सायं 8 बजे से 10 बजे तक ग्राम सामण (महम) में भारी जनसमूह ने वेदप्रचार कार्यक्रम में हिस्सा लिया।
3. 4 अक्तूबर 2015 को सायं 7.30 बजे से 10 बजे तक महम शहर में भारी जनसमूह ने वेदप्रचार कार्यक्रम में हिस्सा लिया।
4. 5 अक्तूबर 2015 को सायं 8 बजे से 10.15 बजे तक ग्राम मकड़ौली (रोहतक) में वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में श्री सत्यव्रत आर्य, श्री सत्यवान आर्य, श्रीनिवास आर्य, श्री जगमाल प्रवक्ता, श्री महेन्द्र सिंह व श्री रणवीरसिंह ने पूरा सहयोग दिया। भारी संख्या में जनसमूह ने वेदप्रचार कार्यक्रम में भाग लिया। वेदप्रचार कार्यक्रम में 5,700 रु० का सहयोग मिला। श्री सत्यव्रत आर्य ने आगन्तुकों का ग्राम की तरफ से धन्यवाद किया।
5. 6 अक्तूबर 2015 को सायं 8 बजे से 10 बजे तक ग्राम जसिया (रोहतक) में भारी जनसमूह ने वेदप्रचार कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

उपरोक्त कार्यक्रमों में मुख्य वक्ता हरियाणा गोशाला संघ के प्रधान आचार्य योगेन्द्र जी ने देश में गोमाता की भयावह स्थिति पर प्रकाश डाला और गोमाता की दयनीय स्थिति के सम्बन्ध में चलचित्र भी दिखाया गया। सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल मधुर, श्री जगदीश आर्य तथा आचार्य रामदयाल की भजनमण्डलियों के प्रेरणादायक भजन हुए। श्री सुरेन्द्र सिंह दहिया ने भी पंचमहायज्ञों आदि पर प्रकाश डाला। श्रीमती सुमित्रा आर्या ने भी भजनों के माध्यम से महिलाओं द्वारा अंधविश्वास पर प्रकाश डाला। इनके अतिरिक्त श्री कर्णसिंह मोर का विशेष सहयोग रहा।

वाक्वर्धनी सभा का आयोजन

हिसार। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में महात्मा आनन्द स्वामी हॉल में 26.9.2015 को प्रात: 9 बजे यज्ञ के बाद वाक्वर्धनी सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने की। आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। ब्र० सुचित्र सरकार ने धर्म के स्वरूप पर प्रकाश डाला एवं ब्र० अमित ने वेद की व्याख्या की तथा दोहे भी प्रस्तुत किये। ब्र० रुचिमय सरकार ने देश की आजादी के आन्दोलन पर प्रकाश डाला। ब्र० कृष्णकुमार आर्य ने देश की आजादी में आर्यसमाज का योगदान, ब्र० मनोरंजन आर्य ने ईश्वर, जीव, प्रकृति पर विचार रखे। ब्र० रमेश कुमार ने लोभ पाप का मूल पर विचार रखे। पांच अन्य ब्रह्मचारियों ने भी अपने विचार रखे। दूसरी बार भी भाषणों का कार्यक्रम सफल रहा। 26 छात्र व 35 नर-नारी उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद देशी घी का प्रसाद बांटा गया।

—ब्र० तलवार आर्य, हिसार

सूचना

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज अशोक विहार-मालवीय नगर, सोनीपत का वार्षिक समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 15-11-2015 (रविवार) को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर बड़े-बड़े विद्वद्गण, राजनेता व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जा रहा है। इस अवसर पर जिन महानुभावों ने यज्ञशाला निर्माण में बढ़-चढ़कर सहयोग किया है, उनको भी सम्मानित किया जायेगा तथा उसी दिन नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन भी करवाया जाएगा।

—नारायण सिंह आर्य, प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार, मालवीय नगर, सोनीपत मो० 09466424001

आर्य बाल भारती स्कूल के छात्र-छात्राएं बनीं विजेता

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के छात्र व छात्राओं ने हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित जिला स्तरीय अन्तर 11 वर्ष आयु में छात्र एवं छात्राओं ने रस्साकस्सी में पानीपत जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह प्रतियोगिता आर्य बाल भारती के खेल के मैदान में आयोजित हुई। विद्यालय ने इन खेलों में प्रथम वार हिस्सा लिया था। लड़कों ने मतलौडा खण्ड व बापौली खण्ड को पराजित किया और लड़कियों ने इसराना व समालखा खण्ड को पराजित किया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के प्रधान श्री आजादसिंह आर्य ने सभी को बधाई दी और आगे भी जीत प्राप्त करने की शुभकामनाएं दीं। विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य ने सभी की प्रशंसा करते हुए कहा कि छोटे-छोटे बच्चों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है, इनके प्रथम स्थान का प्रमाण-पत्र खेल विभाग की ओर से प्राप्त होगा इससे खुशी की बात और क्या हो सकती है।

इस अवसर पर प्रिंसिपल श्री मती रेखा शर्मा ने सबका सम्मान व धन्यवाद किया। सन्दीप पी.टी.आई., राजकुमार शास्त्री व अजय आर्य आदि मौजूद रहे।

-जगदीश चहल (डी.पी.ई.), पानीपत

निजता की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति.... पृष्ठ 7 का शेष.....

अवसरों पर दिखाकर अन्य के लिए भी प्रेरणादायक बन सकता है।

एक अन्य घटना से भी पढ़ने वालों को एक सन्देश मिल सकता है। एक दिन पार्क में हम तीन व्यक्ति बैठे थे। कुछ देर बाद हमारे परिचित वृद्ध व्यक्ति हाथ में मोबाइल लेकर जोर से आवाज देते हुए आये कि किसी का मोबाइल हो तो ले जाओ। हमने भी ऊंची आवाज में कहा कि किसी का मोबाइल गिर गया हो तो ले लो। वहां पार्क में उपस्थित व्यक्तियों का वह नहीं था। वृद्ध कहने लगा कि अब क्या करें? इसको कहाँ रखें? किसको दें? वृद्ध व्यक्ति मोबाइल का ज्यादा उपयोग करना नहीं जानता था। हमने उससे कहा आप बैठो अभी पता करते हैं। मोबाइल में घर के नम्बर प्राय: होते हैं। यदि घर के भी न हों तो उसमें किसी भी नंबर को फोन करके मालिक की जानकारी ली जा सकती है, यदि फोन कोई वापिस करना चाहे तो। हमने उसमें फीड पापा के नंबर पर फोन लगाया। उसने फोन उठाया। हमने कहा एक फोन हमें पड़ा मिला है, आपका है तो ले जावें। वह करीब चार किलोमीटर दूर रहता था लगभग आधे घण्टे में हमारे बताये पते पर आ गया। फोन उसका था हमने उसे दे दिया। उसने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया। यदि मोबाइल किसी का गुम हो जाये और जिसे मिला है वह उसे लौटाना चाहे तो बड़ा सरल और सहज है। परन्तु यहाँ अन्तरात्मा की आवाज को कौन कितना ईमानदारी से सुनता है यह देखने की बात है। कई बार किसी वस्तु को वापिस करने का कोई भी उपाय न हो तो मनुष्य बेबस हो जाता है। परन्तु जब किसी वस्तु को उसके वास्तविक मालिक को लौटाने का उपाय हो तो मनुष्य को अपने श्रेष्ठ आचरण का पालन करना ही चाहिए। ऐसे ही पग-पग पर अनेक प्रकरण जीवन में आते हैं जहां हम अपनी अन्तरात्मा का श्रेष्ठतम रूप प्रकट कर सकते हैं और ऐसा अन्य जीव नहीं कर सकते केवल मानव ही कर सकता है।

संपर्क-म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी, मो० 9416337609

उद्घाटन समारोह निमन्त्रण

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की सुन्दरपुर शाखा का उद्घाटन समारोह 1 नवम्बर 2015 को प्रात: 8 से 10 बजे माननीय पूज्य आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया सुन्दरपुर रोहतक में होगा। इस कार्यक्रम में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक, स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती प्रधानाचार्य, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक आदि विद्वान् उपस्थित होंगे। इस कार्यक्रम में आप सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : **वानप्रस्थ निगम मुनि** (पूर्व नाम रणवीरसिंह बल्हारा) प्रबन्धक, दर्शन योग महाविद्यालय महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।